जिंदगी आगे बढ़ने का काम है, रूकने का नहीं।

– अज्ञात

क्रूरता के छोर से ही शुरू होता...

ऐसे संस्कारों का ही नतीजा है कि अपने देश में घरेलू हिंसा भले ही घर–घर की कहानी हो, लेकिन थानों में इसकी शिकायतों के आंकड़े आज भी इतने कम हैं कि इस मामले में विकसित देशों की महिलाएं भी भारतीय महिलाओं से ईर्ष्या कर सकती हैं।

नवीन वर्मा।

घरेलू हिंसा हमारे समाज के लिए कोई अटपटी चीज नहीं है। जहां दो बर्तन होते हैं वहां ठन–ठन होती ही है। हमेशा एक बर्तन ही दूसरे को ठनठनाता है, और जब–तब कुछ ज्यादा ही ठनठना देता है। लेकिन मुहावरा ज्यों का त्यों चलता रहता है, जिंदगी का ढर्रा नहीं बदलता। बहरहाल, समय बदलने के साथ यह सवाल भी खड़ा हो रहा है कि पत्नी के खिलाफ पति की मौखिक और शारीरिक हिंसा को कैसे देखा जाए? हाल में रिलीज हुई फिल्म थप्पड़श (पढ़ेंरू मूवी रिव्यू) में इस मुद्दे को समझ के एक अलग स्तर पर उठाने की कोशिश की गई है। पत्नी के खिलाफ पति की हिंसा पर समाज का ध्यान तभी जाता है जब बात हद से ज्यादा बढ़ जाती है। कोई अपनी पत्नी, अपने बच्चों के प्रति इतना निर्मम कैसे हो सकता है? घरेलू हिंसा (रोकथाम) कानून का दायरा भी क्रूरता के छोर से ही शुरू होता है। घरेलू हिंसा अपने आप में हमारे लिए कोई मुद्दा नहीं होती।

सारे सवाल हिंसा की मात्रा से जुड़े होते हैं। लड़कियों की विदाई के समय उन्हें आज भी ऐसी शिक्षा देना आम है कि पति अगर किसी बात पर उखड़ गया, कुछ भला–बुरा बोल गया या कभी गुस्से में उसका हाथ भी उठ गया तो उन्हें अपना संतुलन नहीं खोना चाहिए। ऐसे संस्कारों का ही नतीजा है कि अपने देश में घरेलू हिंसा भले ही घर–घर की कहानी हो, लेकिन थानों में इसकी शिकायतों के आंकड़े आज भी इतने कम हैं कि इस मामले में विकसित देशों की महिलाएं भी भारतीय महिलाओं से ईर्ष्या कर सकती हैं। समस्या की ऐसी झूठी समझ पर सवालिया निशान लगाने के लिए भारत जैसे पुराने समाज को बहुत सारे सांस्कृतिक झटकों की जरूरत पड़ती है। तीन–चार साल पहले आई फिल्म पिंक ने भी हमें ऐसा ही एक झटका दिया था। याद रहे, यौन संबंधों में सहमति को गैरजरूरी मानने वालों में आम लोग ही नहीं, पाश जैसे क्रांतिकारी कवि भी शामिल रहे हैं– शुद्ध किसी लड़की की पहली हां जैसी ना है। धारणा यह कि लड़की तो ना ही बोलती है, यह ना कब हां हो जाती है, यही समझने की बात है। पिंक ने इस धारणा को ध्वस्त करते हुए मर्यादा की नई रेखा खींची कि ना का मतलब सिर्फ ना होता है। उम्मीद करें कि दांपत्य में निजता की जगह को लेकर ऐसी ही एक रेखा थ्थप्पड़ट के जरिये लोगों के दिलोदिमाग में खिंचेगी। वैसे, फिल्मों की अपनी सीमाएं होती हैं। उन पर अपनी अपेक्षाओं का बोझ लादने से बेहतर है, समाज अपने स्तर पर भी ऐसे सवालों से टकराना शुरू करे। दो वयस्क व्यक्तियों के बीच किसी मसले पर असहमति अगर उनमें से किसी एक को बल प्रयोग की ओर ले जाती है तो इसका अर्थ यही है कि उनमें आपसी संवाद नहीं रह गया है। ऐसे में रिश्ते को बनाए रखने के लिए भले ही कितने भी पवित्र मूल्यों का हवाला दिया जाए, पर हकीकत में उसका टूट जाना ही ठीक होगा।

आध्यात्मिक पर्यटन

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। भारत की छवि पूरे विश्व में हमेशा से एक आध्यात्मिक और धार्मिक देश की रही है। यहां पाई जाने वाली विभिन्न सभ्यताएं और धार्मिक कृत्य इतने प्रभावशाली रहे हैं कि दूर देश के लोग भी यहां खिचे चले आते हैं। अध्यात्म और धर्म के साथ सभी जुड़ना चाहते हैं लेकिन अपने घर से दूर किसी नई जगह पर जाकर रुकने में आने वाली कठिनाईयां अक्सर लोगों को रोक देती हैं लेकिन अब यह कठिनाई दूर होने लगी है। लोगों की इस आस्था को समर्थन देने के लिए अब कई होटल भी इस क्षेत्र में आगे आ रहे हैं। ये होटल विभिन्न आध्यात्मिक और धार्मिक स्थलों पर अपनी मौजूदगी दर्ज करा रहे हैं ताकि देश और विदेश दोनों जगहों के लोग इस तरह की यात्राओं का आनंद पूरी तरह ले सकें। यह होटल सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेश में भी अपनी जड़ें फैला रहे हैं।

संपादकीय

हार ने जो बताया

न्यूजीलैंड में टीम इंडिया के प्रदर्शन ने भारतीय क्रिकेटप्रेमियों की चिंता बढ़ा दी है। टी–20 सीरीज में शानदार जीत दर्ज करने के तुरंत बाद वनडे और टेस्ट मैचों की सीरीज में बुरी तरह ध्वस्त होने से टीम की कुछ बुनियादी कमजोरियां उजागर हो गई हैं। ऐसा पहले भी कहा जा चुका है कि आईपीएल ने भारतीय क्रिकेट पर गहरा असर डाला है और क्रिकेटरों के लिए वही सफलता की कसौटी बन गया है। हर खिलाड़ी के मन में टी–20 का फॉर्मेट गहराई से बैठ गया है और वही भारतीय क्रिकेट का चरित्र बनता जा रहा है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि हमारे खिलाड़ी बाकी प्रारूपों में सफल नहीं हो पा रहे हैं। बल्लेबाजों में टिककर खेलने की प्रवृत्ति का अभाव होता जा रहा है, जो एकदिवसीय और खासकर टेस्ट मैचों में बेहद जरूरी है। भारतीय टीम टेस्ट मैचों की कुल चार पारियों में से सिर्फ एक में 250 रन के आसपास मुश्किल से पहुंच पाई। अच्छे से अच्छे बैट्समैन भी पचास रन का आंकड़ा छूते ही धैर्य खोकर आउट हो गए। कई पूर्व क्रिकेटरों ने इस ओर ध्यान खींचा है। वीवीएस लक्ष्मण ने कहा कि बल्लेबाज विकेट पर रुकने के लिए जरूरी अनुशासन नहीं दिखा सके। पूर्व कप्तान कपिल देव ने कहा कि हर मैच में एक अलग टीम बनाने की रणनीति महंगी पड़ी। उनकी राय है कि फॉर्मेट के आधार पर टीम चुनने के बजाय फॉर्म के आधार पर किसी खिलाड़ी को टीम में जगह मिलनी चाहिए थी। अगर कोई खिलाड़ी फॉर्म में है तो उसे सिर्फ इस आधार पर बाहर नहीं कर दिया जाना चाहिए कि वह दूसरे प्रारूप का खिलाड़ी है। एक खिलाड़ी फॉर्म में होता है तो उसे खेलने की जरूरत होती है।

देश के प्रत्येक व्यक्ति को इस तरह के विरोध–प्रदर्शन का पूरा अधिकार है। लेकिन समझ में नहीं आता कि इन दोनों प्रावधानों के समर्थन में सभाएं और प्रदर्शन करने की जरूरत क्या थी?

शांति कायम होने की उम्मीद बढ़ी

वेदप्रताप वैदिक।

अमेरिका और तालिबान के बीच हुए समझौते से अफगानिस्तान में शांति कायम होने की उम्मीद बढ़ी है। करीब अठारह महीने की वार्ता के बाद दोनों ने कतर के दोहा में शनिवार को शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए। लगभग 30 देशों के प्रतिनिधि समझौते के गवाह बने जिनमें भारत भी शामिल है। भारत पहली बार अमेरिका–तालिबान के बीच शांति–प्रक्रिया में आधिकारिक तौर पर शामिल हुआ है।

अमेरिका–तालिबान समझौते के मुताबिक 135 दिनों के अंदर सैनिकों की संख्या 8600 तक घटाने के बाद अमेरिका और उसके सहयोगी 14 महीनों के भीतर बाकी बचे सैनिकों को वापसबुलाएंगे। तालिबान ने वादा किया है कि वह अल कायदा और किसी अन्य आतंकी संगठन से कोई रिश्ता नहीं रखेगा, उन्हें अपने प्रभुत्व वाले इलाके में किसी भी तरह की गतिविधि करने नहीं देगा। इसके साथ ही अफगानिस्तान से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर अफगान सरकार, तालिबान और अन्य समूहों के प्रतिनिधि नॉर्वे की राजधानी ओस्लो में 10 मार्च तक आमने–सामने की बैठक करेंगे।

अमेरिका में हुए11 सितंबर 2001 के हमले के बाद अमेरिकी सेना नेअफगानिस्तान में डेरा डाला

था। इस लड़ाई में करीब डेढ़ लाख से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। अमेरिकी सैनिकों की वापसी अमेरिका में एक बड़ा मुद्दा बना हुआ है। ट्रंप इसे राष्ट्रपति चुनाव में भुनाना चाहते हैं। इसलिए वह इस समझौते को लेकर जल्दी में थे। हालांकि कई अमेरिकी सांसदों ने आगाह किया है कि वह तालिबान पर भरोसा न करें। शायद इसी को ध्यान में रखकर रखकर अमेरिकीविदेश मंत्री माइक पोम्पियो ने कहा हम इसकी करीब से निगरानी करेंगे कि तालिबान अपने वादों को लागू करता है या नहीं।

सवाल है कि इस समझौते से दोनों युद्धरत पक्षों को ही राहत मिलेगी या अफगानिस्तान की जनता के जीवन में भी अमन–चौन कायम होगा, जिसने इस लंबे टकराव में भारी तकलीफें झेली हैं। पिछले कुछ वर्षों से अफगानियों को नए निजाम में एक आधुनिक समाज औरव्यवस्था की तमाम सहूलियतें हासिल हुई हैं। खासकर महिलाओं को घर से बाहर निकलने, पढ़ने–लिखने और काम करने की आजादी मिली है। अब यह देखना होगा कि ६ ुर–कट्टरपंथी तालिबान इन नए बदलावों को कितना अपना पाते हैं।

इस समझौते का सीधा असर भारत पर पड़ेगा। समझौते के बाद तालिबानी आतंकियों के पाकिस्तान की सीमा के जरिए भारत में घुसपैठ की आशंका कई एजेंसियां जता चुकी हैं। अगर वहां तालिबान सत्ता में आया तो हमारे लिए मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। सबसे पहले तो वहां चल रहीं हमारी तमाम परियोजनाएं प्रभावित हो सकती हैं।

तालिबान से पाकिस्तान के संबंध को पूरी दुनिया जानती है। पाकिस्तान पूरी कोशिश में रहेगा कि वहां तालिबान सत्ता में आए। ऐसे में भारत के लिए चुनौतियां बढ़ गई हैं। उसे न केवल पाक–तालिबान गठजोड़ को लेकर सतर्क रहना होगा बल्कि अफगानिस्तान में अपने हितों की रक्षा को लेकर भी ज्यादा मुस्तैदी दिखानी पड़ सकती है।

अष्टयोग- 4962

	5		3			
6	38	6	32		30	7
			5	3		1
1	25	2	37		32	
5				7		4
	26	4	38		36	
	1			2	7	3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4961 का हल

1	2	3	4	5	6	7
2	21	1	36	6	39	5
3	5	4	6	7	1	2
4	36	2	30	1	26	6
5	6	7	1	2	3	4
6	48	6	32	4	22	3
7	6	5	4	3	2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

भविष्य के लिए

मोहन। फिर क्या कारण है कि सुचालित, सुप्रबंधित और जन–जन में लोकप्रिय एलआईसी को भविष्य में बेचने की तैयारी की जा रही है। दरअसल जीएसटी के कठिन क्रियान्वयन के चलते अप्रत्यक्ष कर की मात्रा में भारी कमी देखी जा रही है। सरकार का मानना है कि एलआईसी के आंशिक विनिवेश से उसे 70,000 करोड़ रुपये मिल जाएंगे। सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों के विनिवेश से भी 2. 10 लाख करोड़ रुपये उगाहने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य केंद्रीय बजट में रखा गया है। अगर कोई व्यक्ति अपने बुरे दिनों में अपनी खानदानी संपत्तियों को बेच डाले तो वह दिन दूर नहीं जब उसके पास अपने जीवनयापन के लिए भी कुछ नहीं बचेगा। इसीलिए एलआईसी को प्रायरू म्युचुअल बेनेफिट लाइफ इंश्योरेंस कंपनी भी कहा जाता है। चालू वित्तीय वर्ष (अप्रैल 2019 से जनवरी 2020) में एलआईसी के प्रथम वर्षीय प्रीमियम में 43 प्रतिशत वृद्धि हुई जबकि मजेदार बात यह कि इन्हीं पॉलिसीधारकों की दुहाई देकर एलआईसी के निजीकरण की तैयारी की जा रही है।